Part-2 Paper-3 Unit-5

Agricultural Regions of Bihar — S. Mazumder.

बिहार में कृषि यहाँ के अर्थतंत्र, अधिवास तथा सामाजिक सांस्कृतिक क्रियाकलापों का आधार है। 70% से ज्यादा बिहार-वासी अपनी आजीविका चलाने के लिए तथा राज्य की आधी से अधिक राजकीय आय कृषि पर ही निर्भर है।

बिहार की कृषि आजीविका प्रधान है। यहाँ यहाँ के निवासियों के जीवनयापन का साधन भी है। यहाँ की कृषि पर जनभार अधिक है क्योंकि जीविका के अन्य साधनों का यहाँ अभाव है। बिहार की कृषि में खाद्यान्नों की प्रधानता है क्योंकि पेट भरना प्रमुख लक्ष्य। खाद्यान्नों में धान, गेहूँ, मक्का, ज्वार-बाजरा, चना और दलहन की फसलें हैं। यहाँ फसलों की विविधता भी अधिक है। साथ ही एक ही खेत में एक साथ कई फसलें बोई जाती हैं। यहाँ न्यूनतम कृषि यंत्रों का प्रयोग होता है। यहाँ की जलवायु और मिट्टी भी कृषि के लिए उपयुक्त है। कृषि मुख्यतः वर्षा पर आधारित है। उपर लिखित सभी विशेषताएँ बिहार के कृषि के महत्व को स्पष्ट करता है।

बिहार के कृषि प्रदेश → किसी भी भौगोलिक अध्ययन में "प्रदेश" की अवधारणा महत्वपूर्ण है। प्रदेश एक ऐसा भाग होता है जो कुछ विशेष लक्षणों से युक्त होता है, जिस कारण उसे एक अलग इकाई के रूप में पहचाना जा सकता है।

कृषि प्रदेश भी एक ऐसा ही विशिष्ट लक्षण वाला क्षेत्र है, जिसकी बाह्य सीमा स्पष्टतः निर्धारित होती है। ऐसे भाग कृषि के विशेष गुणों से युक्त होते हैं और दूसरे भाग से भिन्न नजर आते हैं। कृषि प्रदेश की मुख्य विशेषताएँ हैं :—

1. इनकी स्थिति होती है। 2. इनकी सीमाएँ संक्रमणीय होती है। 3. ये आकारिक अथवा कार्यपरक होते हैं। 4. इन्हें सोपान क्रम में संगठित किया जा सकता है।

बिहार की कृषि में एकरूपता का अभाव है। यहाँ अनेक प्रकार की फसलें उत्पन्न की जाती है जिसके पीछे भौगोलिक तथा प्राकृतिक कारकों का योगदान होता

है। भौगोलिक कारकों में स्थलाकृति, जलवायु, मिट्टी है। वहीं प्राकृतिक कारकों में पूँजी, सिंचाई, बाजार और कीमत मुख्य होता है, कृषक अपने कृषि से अधिकाधिक उत्पादन तथा अधिकतम लाभ चाहता है, साथ ही कोशिश होती है कि खाद्य फसल के साथ नकदी फसल भी उगा ली जाए। इस प्रक्रिया से फसल साहचर्यों की व्यवस्था बनती है और कृषक भी ऐसे फसल साहचर्यों की व्यवस्था अपनाता है जिससे अधिकतम उत्पादन, न्यूनतम आगतों के साथ लाभ भी है।

बिहार की कृषि को भी फसल साहचर्य विधि से विभिन्न विद्वानों ने अलग अलग कृषि प्रदेशों में बाँटे हैं। प्रो० इनायत अहमद ने बिहार को 12 कृषि प्रदेशों में, प्रो० आर० बी० पी० सिन्हा ने बिहार को 10 कृषि प्रदेशों में, प्रो० आर० पी० सिंह एवं ए० कुमार ने बिहार को 10 कृषि प्रदेशों में तथा प्रो० आर० एल० सिंह ने भी बिहार के कृषि प्रदेशों को 7 कृषि प्रदेशों में बाँटे हैं।

हालाँकि ऊपर वर्णित विभाजन के बाद आज तक बिहार के कृषि में कई परिवर्तन भी हुए जैसे कृषिगत ढाँचा, व्यवसायीकरण, कृषि का आधुनिकीकरण, भोजन की माँग साथ ही खान पान के तरीके, इस प्रकार प्रमुख तीन फसलों के आधार पर बिहार के कृषि प्रदेश को निम्नप्रकार से बाँटा जा सकता है,

1) धान, गेहूँ, चना प्रदेश → बिहार के द० प० भाग में अवस्थित जिलों में इन तीन फसलों की प्रमुखता है, इसके अन्तर्गत पटना, नालंदा, जहानाबाद, अरवल, भोजपुर, बक्सर, कैमूर, रोहतास तथा औरंगाबाद जिले आते हैं, यहाँ का प्रमुख फसल धान है। यह बिहार का एकमात्र पट्टी है जहाँ चने की खेती होती है, तीन फसलों के अलावा मसूर, दाल, सरसों तथा राई जैसे तेलहन भी उगाए जाते हैं, इन जिलों के कई कृषि क्षेत्र जो शहरों से सटे हुए हैं वहाँ फसलों के अलावा सब्जियाँ तथा मौसमी फल भी उगाए जाते हैं, जिससे किसानों को आमदनी अधिक होती है।

2) धान, मकई, चना प्रदेश → यह कृषि प्रदेश मुख्यतः पूर्वी दक्षिणी बिहार का मैदानी भाग है, जिसके अन्तर्गत भागलपुर, बाँका, जमुई, लखीसराय, शेखपुरा आता है, यहाँ अगहनी चावल, मकई मक्का और रबि फसल चना का उत्पादन होता है, इनके अलावा गेंहू अन्य प्रमुख खाद्यान्न है, यहाँ सिंचाई की अभाव तथा अनुपयुक्त मिट्टी के कारण इस प्रदेश के कुछ पहाड़ी भागों में गेंहू की खेती नहीं हो पाती।

3) धान, गेंहू, गन्ना प्रदेश → इस कृषि प्रदेश के अन्तर्गत पूर्वी तथा पश्चिमी चम्पारण के अधिकांश भाग, सीतामढ़ी, मधुबनी, गोपालगंज जिले आते हैं, चावल यहाँ की प्रमुख फसल तो है ही साथ ही सिंचाई की सुव्यवस्था से रबि फसल गेंहू द्वितीय प्रमुख फसल हो गया है, तीसरा प्रमुख फसल गन्ना है जो कि एक नकदी फसल के रूप में यहाँ उगाया जाता है, यहाँ उपजाऊ मिट्टी, सिंचाई की सुविधा तथा चीनी मिलों की निकटता ने गन्ने के उत्पादन को प्रोत्साहित किया है, इन तीन फसलों के अलावा साग-सब्जियाँ तथा मालदह, कृष्णभोग कलकतिया आम जैसे फलों के उत्पादन भी यहाँ बढ़ी है, जो अन्य मौसमी फलों के उत्पादन को प्रेरित करता है।

4) धान, मक्का, गेंहू प्रदेश → इस कृषि प्रदेश के अन्तर्गत घाघरा-गंडक दोआब क्षेत्र तथा गंडक एवं बूढ़ी गंडक के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र आते हैं, इसके अन्तर्गत सारण, सिवान, गोपालगंज, वैशाली, मुजफ्फरपुर जिले सम्मिलित हैं, सिंचाई सुविधा की उपलब्धता से यहाँ गेंहू उगाया जाता है, लीची तथा केले जैसे फलों की खेती भी प्रमुख है साथ ही साग-सब्जियों के उत्पादन को भी महत्व दिया जाता है, इस प्रदेश में तम्बाकू तथा खरबूज भी खूब उगाए जाते हैं।

5) धान, गेंहू, मक्का प्रदेश → इस प्रदेश के अन्तर्गत दरभंगा, समस्तीपुर, बेगुसराय, सहरसा, सुपौल, खगड़िया, मधेपुरा आदि जिले आते हैं, स्पष्ट है धान सबसे प्रमुख फसल है जिसके साथ

गेहूं तथा मक्का क्रमशः महत्वपूर्ण फसल के रूप में उगाए जाते हैं, इन भागों में वर्षा भी काफी होती है, अतः फसलों के अलावा साग सब्जी फल भी उगा लिए जाते हैं।

6) धान पटसन गेंहू प्रदेश → बिहार के उत्तरी गंगा मैदान के पूर्वी किनारे पर धान गेंहू के अलावा पटसन की भी खेती की जाती है, पटसन इस कृषि प्रदेश में नकदी फसल है, इस प्रदेश के अन्तर्गत किशनगंज, पूर्णियाँ, अररिया आते हैं, कटिहार एक मात्र प्रदेश है जहाँ गेंहू से ज्यादा पटसन उत्पादन का महत्व अधिक है।

7) मक्का गेंहू धान प्रदेश → यही प्रदेश एकमात्र कृषि प्रदेश बिहार का है जहाँ धान जैसे खाद्यान्न फसल को, तीसरे स्थान पर रखा गया है, इस प्रदेश के अन्तर्गत बेगुसराय, खगड़िया तथा मुंगेर जिले आते हैं।

8) चावल गेंहू आलू प्रदेश → यह प्रदेश गया जिला में विस्तृत है, जहाँ चावल, गेंहू के अलावा आलू की खेती बड़े पैमाने पर होती है, आलू के साथ अन्य सब्जियों की उपज होती है, जिसकी खपत स्थानीय क्षेत्रों में होती है पर आलू का व्यापार किया जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट है विशेषतः खाद्यान्न फसलों के क्रमों में परिवर्तन उसके साहचर्य तथा उत्पादन मात्रा के आधार पर बिहार के कृषि प्रदेशों को बाँटा गया है।

—X—